धारण करे तो धर्म

आचार्य सत्यनारायण गोयन्का

धारण करे तो धर्म

(धर्म के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश)

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

धारण करे तो धर्म

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ७

१. भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा ९

निर्मल धर्म १७

धर्म को समझें २२

धर्म सनातन २६

२. बुद्ध और धर्म ३१

वास्तविक ब्रह्मयान ३१

धर्माचरण ही ब्रह्माचरण ३३

धर्म धारण करें ३५

अमित असीम धर्म ३८

सही अहिंसक ४१

शुद्ध धर्म का आकलन ४४

बुद्ध किसे कहते हैं ४७

धारण करे सो धर्म ५४

३. आंखों देखा विवरण ६१

ब्रह्मायु धन्य हुआ ६७

४. असीम करुणानिधान – [१] ७४

रक्त-रंजित यज्ञ ७५

असीम करुणानिधान – [२] ७९

५. बढ़े पारमी क्षांति की ८५

पुत्र-वियोग ८५

पत्नी-वियोग ८८
अग्रज-वियोग ८९
पितामह-वियोग ८९
पिता-वियोग.....९०
६. धर्म-समन्वित.....९२
७. कीचड़ में कमल खिला ९८
नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी १०२
८. पुरुषार्थी कौमारभृत्य १०८
जीवक की प्रसिद्धि ११२
राजगृह का नगरश्रेष्ठि ११२
काशी का श्रेष्ठिपुत्र.....११३
राजा प्रद्योत ११४
भगवान बुद्ध को दुशाला.....११६
९. राजकुमारी चुंदी के प्रश्न ११८
१०. अभागा राजकुमार जयसेन १२३
भ्रमित जयसेन १२८
११. महाली लिच्छवी.....१३४
धन्य हुई वैशाली.....१३९
१२. अनाथपिंडिक.....१४८
बुद्ध दर्शन.....१४८
धर्म दर्शन १५२
संघ दर्शन १५८
दान-चेतना १६२
अनर्घ दान १६९
१३. तथागत का पार्थिव शरीर १७६

धारण करे तो धर्म

धारण करे तो धर्म है, वरना कोरी बात।
सूरज उगे प्रभात है, वरना काली रात॥

प्रकाशकीय

कल्याणमित्र श्री सत्यनारायणजी गोयन्का की कई धर्म-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके अनेक लेख, प्रश्नोत्तर तथा प्रवचनों के अंश समाचार पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए हैं। श्री गोयन्काजी के प्रवचन कई टीवी-चैनलों पर प्रसारित होते रहते हैं। इन सबसे अनेकानेक लोग प्रेरणा पाकर, शुद्ध धर्म की ओर आकर्षित होकर, उनके या उनके द्वारा मनोनीत सहायक आचार्यों के मार्गदर्शन में विपश्यना-ध्यान के दस दिवसीय शिविरों में सम्मिलित होकर सही माने में धर्मलाभी हुए हैं। पुराने साधकों को इस विपुल साहित्य से धर्म की गहराइयों को समझने और जीवन में उतारने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

प्रमुख विपश्यना केंद्र, **धम्मगिरि,** इगतपुरी से 'विपश्यना विशोधन विन्यास' साधकों के लाभार्थ 'विपश्यना' नाम से हिंदी और अंग्रेजी में पत्रिकाएं भी प्रकाशित करता है। पूज्य गुरुजी के लेख, तत्संबंधित धम्मवाणी और उनके स्वरचित दोहे 'विपश्यना' मासिक (हिंदी) के अविभाज्य अंग हैं।

इन पत्रिकाओं में पूज्य गुरुजी के अनेक लेख विषयगत क्रमशः छपे। परंतु कभी-कभी अन्य प्राथमिकताओं के कारण बीच में दूसरे विषय के लेख भी पत्रिका में छपते रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक **"धारण करे तो धर्म"** में पूज्य गोयन्काजी के ऐसे लेखों का समावेश किया गया है जिनमें २६०० वर्ष पुरातन भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में धर्म को सही ढंग से समझने और उन्हें धारण कर अपना लौकिक तथा पारलौकिक जीवन सुखी बनाने का सजीव चित्रण है। इससे समाज के हर वर्ग के लोग लाभान्वित हुए। 'विपश्यना' की वही कल्याणकारी विद्या भारत से लुप्त हो जाने के बाद बर्मा में गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा बहुत थोड़े से लोगों में, पर अपने शुद्ध रूप में जीवित रही, आज पुनः जन-जन को लाभान्वित कर रही है जो कि धर्म के सार्वकालिक स्वरूप को ही स्पष्ट करती है।

ऐसे अनमोल लेखों को संगृहीत कर मोतियों की तरह चुन-चुन कर विषयगत पिरोने में कुछ बातें बार-बार दोहरायी गयी हैं, पर धर्म की व्याख्या व स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए इन्हें दोहराना उचित ही लगता है। इस

लेखमाला का हर मोती एक-दूसरे से जुड़े रह कर भी अपने आप में अलग विशिष्टता लिए हुए है। विश्वास है पाठक इस प्रयास से प्रभूत प्रेरणा प्राप्त कर यथासंभव विपश्यना-शिविरों में सम्मिलित होकर धर्म के व्यावहारिक अभ्यास से न केवल अपना मंगल साधेंगे, बल्कि अन्य अनेकों के मंगल में भी सहायक बनेंगे। श्री गोयन्काजी के साहित्य-सृजन का यही एकमेव उद्देश्य है।

प्रकाशन समिति,

विपश्यना विशोधन विन्यास

१. भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा

आओ, बुद्ध को समझें और उनकी शिक्षा को समझें।

भगवान बुद्ध की पौराणिक और अलौकिक व्याख्या के धुँवासे में अक्सर उनका सही व्यक्तित्व धूमिल हो जाता है और ऐसे ही धूमिल हो जाती है उनकी कल्याणकारी शिक्षा। हम ऐसा न होने दें, इसी में सब का कल्याण समाया हुआ है।

गौतम बुद्ध हमारे देश के एक ऐतिहासिक महापुरुष हुए। उनके तथा उनकी शिक्षा के बारे में वास्तविकता की खोज करनी हो तो उनकी अपनी वाणी का सहारा लेना उचित है, न कि किसी अन्य के कथन का। औरों का कथन सही भी हो सकता है और अपनी मान्यताओं के रंगीन चश्मे से देखा गया हो तो गलत और भ्रामक भी। भगवान बुद्ध की मूल वाणी अपने देश में लगभग डेढ़-दो हजार वर्षों से विलुप्त हो गयी। परंतु सौभाग्य से पड़ोसी देशों में यहां से जैसी गयी, उसे वहां ठीक वैसे ही अपने शुद्ध रूप में सँभाल कर रखा गया। इतने लंबे अंतराल के बाद वह भारत में पुनः लौटी है। हमें उसका लाभ लेना चाहिए। भारत के इस अनमोल ऐतिहासिक साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा के बारे में अनेक तथ्य स्पष्टतया उजागर होते हैं।

१ – बोधिसत्व सिद्धार्थ गौतम अनेक जन्मों के परिश्रम पुरुषार्थ द्वारा पारमिताओं का याने भवसागर से पार उतरने के लिए आवश्यक धर्मगुणों का परिपूर्ण संचय-संग्रह कर इस अंतिम जन्म में सम्यकरूप से संबुद्ध बने याने स्वयं बुद्ध बने। किसी की कृपा द्वारा ऐसा नहीं हुआ।

२ – गौतम बुद्ध भगवान कहलाए। आज के भारत की सामान्य भाषा में भगवान का अर्थ ईश्वर या परमात्मा हो गया है। परंतु २६ शताब्दी पूर्व के भारत की जन भाषा में इसका अर्थ कुछ और ही था। बुद्ध-वाणी स्पष्टतया कहती है कि **"भग्ग-रागो, भग्ग-दोसो, भग्ग-मोहोति भगवा।" –**

जिसने अपने राग भग्न कर लिए, द्वेष भग्न कर लिए, मोह भग्न कर लिए, वह भगवान है।

इस अवस्था को प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति भगवान बन सकता है।